

हैं, इनके स्थान हैं-हृदय, गुदा, कंठ, नाभि, संपूर्ण शरीर।

पंचबाण पुं. (तत्.) 1. कामदेव 2. कामदेव के पाँच प्रकार के बाण, सम्मोहन, उन्मादन, स्तंभन, शोषण और तापन 2. कामदेव के पाँच पुष्प बाण, कमल, अशोक, आम्र, नव मल्लिका तथा नीलोत्पल 3. कामदेव का एक और नाम।

पंचभद्र वि. (तत्.) 1. पाँच गुणों वाला (व्यंजन आदि) 2. बुरा 3. दुष्ट या पापी 4. पुं. (तत्.) एक प्रकार का अच्छे लक्षणों वाला घोड़ा जिसके मुँह, पीठ, छाती, दोनों बगलों पर एक-सा धब्बा होता है 5. एक ओषधि समूह-गिलोय, पित्त पापड़, मोथा, चिरायता, सोंठ।

पंचभर्तारी स्त्री. (तत्.) द्रौपदी वि. जिसके पाँच पति हों।

पंचभुज वि. (तत्.) पाँच भुजाओं वाला।

पंचभूत पुं. (तत्.) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश; ये पाँच तत्व।

पंचम वि. (तत्.) 1. पाँचवां 2. दक्ष, चतुर 3. सुंदर, कांतिमानु पुं. (तत्.) 1. संगीत के सप्तक का पाँचवाँ स्वर जो कोयल की कूक का स्वर माना जाता है 2. एक राग 3. प्रत्येक वर्ग का पाँचवाँ वर्ण 4. मैथुन (तांत्रिकों का पाँचवाँ मकार)।

पंचमकार पुं. (तत्.) वाममार्गी विचारधारा में स्वीकृत 'म' से आरंभ होने वाली पाँच वस्तुएँ, मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंचमहापातक पुं. (तत्.) महापाप माने गए पाँच कर्म, ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी-गमन तथा इन चारों पातकों में लिप्त व्यक्ति से संपर्क या संसर्ग।

पंचमहामहिष पुं. (तत्.) भैंस का दूध, दही, घी, गोबर, और मूत्र।

पंचमहायज्ञ पुं. (तत्.) गृहस्थ के लिए पाँच अनिवार्य महायज्ञ: ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, पितृयज्ञ और नृयज्ञ।

पंचमहाव्याधि स्त्री. (तत्.) पाँच कष्टप्रद तथा दुःसाध्य व्याधियाँ, अर्श (बवासीर), कर्कट रोग (कैंसर) कुष्ठ (कोढ़) प्रमेह (मधुमेह) तथा उन्माद।

पंचमहाव्रत पुं. (तत्.) योगशास्त्र में प्रतिभासित पाँच आचरण, अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह।

पंचमहाशब्द पुं. (तत्.) पाँच प्रकार के वाद्ययंत्रों से निकले स्वर,- शृंग (सींग) तम्मट- (खंजड़ी) शंख, भेरी और जमघंटा।

पंचमाक्षर पुं. (तत्.) वर्णमाला के हर वर्ग का पाँचवाँ वर्ण जैसे- 'पवर्ग' का 'म'।

पंचमास्य वि. (तत्.) पाँच माहों में से होने वाला या पाँच महीनों का।

पंचमी स्त्री. (तत्.) 1. चंद्रमा की पाँचवी कला 2. पक्ष की पाँचवी तिथि 3. बसंत पंचमी 4. अपादान की विभाक्ति।

पंचमुख पुं. (तत्.) 1. शिव 2. पंच मुखी रुद्राक्ष 3. पाँच नोक वाला बाण वि. पुं. पाँच मुखों वाला ।

पंचमुखी स्त्री. (तत्.) 1. सिंहनी 2. शेरनी।

पंचमूत्र पुं. (तत्.) गाय, बकरी, भेड़, भैंस तथा गधी के मूत्र का सम्मिश्रण।

पंचमेल वि. (तत्.) पाँच प्रकार के पदार्थों से बनी हुई वस्तुएँ, पंचामृत, पंचमेल मिठाई आदि, पंचमेल अचार।

पंचमेवा पुं. (तत्.) पाँच प्रकार का मेवा, किसमिस, बादाम, गरी, छुहारा तथा चिरौंजी।

पंचयज्ञ पुं. (तत्.) दे. पंचमहायज्ञ।

पंचरंग वि. (तत्.) 1. पाँच रंगों वाला 2. एक से अधिक या अनेक रंगों का; रंगविरंगा।

पंचरत्न पुं. (तत्.) पाँच रत्नों का वर्ग, सोना, हीरा, नीलम, लाल तथा मोती; अथवा मोती, मणी, पुखराज, हीरा तथा पन्ना।

पंचरस पुं. (तत्.) आँवला, आमला।